सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 185

www.saikalpadhyatmsanstha.com

श्री साई शक : 38
मई – 2020

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः॥

गुरूबंधु भगिनियों

'दिल्ली' यह शब्द उच्चारित किया तो वह शब्द तुरंत आपके पास पहुँचता है मतलब **जब आपका माध्यम ॐकार साधना द्वारा सिद्ध है तब अगर कार्यार्थ मैं यहाँ पूना से आपको कोई संदेश भेजता हूँ तो वह संदेश आपके पास तुरंत पहुँचता है।** आप भौतिक रूप से मेरे से कितनी भी दूरी पर है, संदेश पहुँचने में विलंब नहीं होता। इस तरह **व्हायब्रेशन्स् की थ्योरी के अनुसार जब आप कार्यार्थ तैयार हो जाते है तब आप सदैव दादा के पास होते है और दादा आपके पास होते है।**

अभी मैंने आपको अन्न के बारे में बताया है। क्या आपको उसके बारे में कुछ अनुभव आया है? भक्तों ने जवाब दिया, ''हाँ, अब हमें कम अन्न लगता है।'' वं. दादाजी ने समझाया – ॐकार साधना से वातावरण की शुद्धता होने के बाद अन्न का उत्पादन बढ़ेगा और फिर हमारे राष्ट्र का निर्यात बढ़ेगा जिससे हमें विदेशी मुद्रा प्राप्त होगी। देखिए कोई भी राष्ट्र एकदम संपन्न नहीं होता। **राष्ट्र के लिए प्रत्येक व्यक्ति को कुछ ना कुछ प्रयत्न करने ही पड़ते है।** अगर हमारे पास कपड़ा, अनाज या और कुछ हमारी आवश्यकता से अधिक होगा तो ही हम विश्व बाजार में अपनी भूमिका रख पाएंगे। आज हमारे पास देने के लिए कुछ भी नहीं है। एक भक्त ने कहा, ''हमें अनाज का उत्पादन बढ़ाना चाहिए।'' वं. दादाजी ने कहा, ''यहाँ हमारे सेमिनार में किसान भी आए है। क्या आप जिस अपेक्षा से दस एकड़ जमीन बोते है उस अपेक्षा के अनुसार आपको फसल प्राप्त होती है? नहीं। आपको बहुत ही कम

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com

Patron
Anand Bapshet

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

फसल प्राप्त होती है। फिर बाकी की फसल कहाँ जाती है? उसे कीड़ा लगने से वह नष्ट होती है। **फसल को लगने वाला कीड़ा कैसे निर्माण होता है?** विश्व की उत्पत्ति में स्वेदज और अंडज ये दो प्रकार है, क्या वे आपको मालूम है? मानव जीवात्मा है; वातावरण में जो दूसरे जीव निर्माण होते है वे कैसे निर्माण होते है? वातावरण की अशुद्धता के कारण। अब तक आप अपनी फसल के लिए केवल गाय का गोबर ही खाद करके इस्तेमाल करते थे जिसके कारण फसल का संरक्षण होता था। अब वातावरण में अशुद्धता निर्माण हुई है। जब एक शुद्ध तत्व और दूसरा अशुद्ध तत्व होता है तब पॉझिटिव्ह और निगेटिव्ह एक होने से हानिकारक जीव निर्माण होते है। अगर आपने कृषि संशोधन के बारे में पढ़ा है तो आपको यह समझ आएगा कि 10 साल पहले आप फसल के संरक्षण के लिए जो दवाई छिड़कते थे वह रोग अब अस्तित्व में ही नहीं है। अब नए जंतुओं के कारण नए रोग निर्माण हुए है। आप कितना संशोधन करोगे? सूर्यप्रकाश से सप्तरंगों की लहरें वातावरण में आते समय दूषित होती है। ऐसी दूषित लहरें धारण होने से नए जंतु निर्माण होते है और वे फसल को नष्ट करते हैं। उनसे संबंधित संशोधन होता है तब तक सूर्यप्रकाश के सप्तरंगों में से दूसरा कोई रंग किसी और रंग के लिए मारक होकर एक और नया जंतु निर्माण होता है। ऐसा यह अंत तक चलता रहेगा। **जब तक वातावरण में अशुद्धता है, खाली जगह है तब तक आप संशोधन करते ही रहोगे और नए मारक जंतु निर्माण होते ही रहेंगे।** पिछले साल आपने खेती में अनाज बोया है और 10 साल पहले भी बोया है। अब इन 10 सालों में आपको क्या प्रगति दिखाई दे रही है? अब आपको **मेहनत ज्यादा है और उत्पादन कम है।**

नीचे की तीनों आकृतियाँ ठीक तरह से देखिए और वे आपको क्या बताती है? इसका अध्ययन करके मुझे बताइए।

मंदिर

मस्जिद

चर्च

हिंदू, मुस्लिम और क्रिश्चन धर्म मंदिरों पर ये प्रतीक दिखाई देते है। ये प्रतीक हमारे पूर्वजों के कर्त्तृत्व की साक्ष (गवाही) है। आज मानवों के लिए कठिन परिस्थिति है। हमारे

ज्ञानी पूर्वजों को इस परिस्थिति का पहले से ही अंदाजा था इसलिए उन्होंने हमारे लिए मंदिर, मस्जिद और चर्च के रूप में इस कठिन परिस्थिति का मुकाबला करने की कार्य योजना बनाई थी।

आज सुबह जब हॉल में गुरुभगिनियाँ ॐकार कर रही थीं तब आप गुरुबंधुओं को खुले शरीर से नाभि के पास बाएँ हाथ पर दाहिना हाथ रखकर बाहर खड़ा किया था। आपको यह पहले ही बताया है कि अब आपका देहिक माध्यम कैसा है? **अब आपके देहिक माध्यम द्वारा ट्रान्समिशन और रिसेप्शन ये दोनों क्रियाऐं होती हैं।** उस समय आप गुरुबंधुओं की साधना हो गई थी मतलब आपका रिसेप्शन हो चुका था। जब हॉल में गुरुभगिनियाँ ॐकार कर रही थी तब आप रिसेप्शन क्रिया द्वारा उन ॐकार लहरों को धारण करके ट्रान्समिशन क्रिया द्वारा उन्हें वातावरण में प्रवाहित कर रहे थे। क्या आपको इसका अनुभव हुआ? उस समय **आपने थोड़े प्रमाण में वातावरण को शुद्ध करने का कार्य किया है।**

1) मंदिर – मंदिर में देवता को अधिष्ठित किया जाता है। उन देवता के सामने मंदिर परिसर में बैठकर वैदिक सूक्तों का मंत्रपठन होता है यानी मंत्रों का उच्चार करके ध्वनि निर्माण की जाती है और वह **ध्वनि मंदिर के गर्भगृह से शिखर द्वारा बाहर वातावरण में जहाँ दुख है, अशांतता है वहाँ प्रवाहित की जाती है।** इस तरह पूर्वकाल में मंदिर बनाने की योजना होती थी। इसलिए यदि मंदिर का सभागृह गोलाकार नहीं है तो भी मंदिर का गर्भगृह हमेशा गोलाकर होता है। मंदिरों में सामूहिक रीति से सूक्त, मंत्र आदि का पठन होता है। वेदिक मंत्रों में **उदात्त-अनुदात्त-स्वरित** ऐसी संथा होती है। इस तरह संथा पद्धति के उच्चार के बिना वे मंत्र सिद्ध नहीं हो सकते। संथा पद्धति से मंत्रपठन करने से **मंदिर का गर्भगृह मंत्रोच्चार के ध्वनि-लहरों से भर जाता है** और फिर वहाँ से वे लहरें गोलाकार ऊपर जाती है। मंदिर के शिखर में छिद्र रखा जाता है। उसमें से वे लहरें बाहर वातावरण में जाती है। मंत्रोच्चार के ध्वनि-लहरों की ईश्वर को खुद के लिए आवश्यकता नहीं होती, **इन लहरों द्वारा ईश्वर लोगों का कल्याण करते है।** ये ध्वनि-लहरें गोलाकार ऊपर जाकर मंदिर के शिखर के छिद्र द्वारा बाहर जाकर संपूर्ण वातावरण को शुद्ध करने के लिए मीलों दूर तक जाती है। यह पद्धति उस समय हिंदू धर्म में थी।

2) चाँद तारा – पूर्वकाल में मुस्लिम धर्म में लोककल्याण का कार्य इस प्रकार होता था– सूर्य बलवान है, हम खुली आँखों से ज्यादा समय तक सूर्य को नहीं देख सकते, सूर्य के सामर्थ्य की कल्पना तथा उपासना भी नहीं कर सकते। सूरज के प्रकाश से चंद्रमा प्रकाशित होता है। चंद्रमा सूरज से प्रकाश लेकर वह प्रकाश वातावरण में रिफ्लेक्ट करता है इसलिए **मुस्लिम लोग अपनी साधना चंद्रमा की ओर भेजते है और उस प्रकाश के माध्यम द्वारा वह साधना वातावरण में प्रवाहित की जाती है।** मतलब देखिए पूर्वकाल में प्रत्येक धर्मप्रवर्तक की दृष्टि कितनी विशाल होती थी।

3) क्रॉस – आप चर्च पर हमेशा क्रॉस देखते है। आप कहते है कि क्रॉस पर जिसस क्राइस्ट को मारा था इसलिए क्रॉस यह क्रिश्चन धर्मियों का प्रतीक है। इसका स्पष्टीकरण इस प्रकार है– आज आपको टी. वी. के लिए ऐन्टीना आवश्यक है, उसका आकार क्रॉस जैसा होता है। क्रिश्चन लोग अपने धर्म के अनुसार चर्च में प्रार्थना करते है। उस **प्रार्थना के स्पंदन**

लोककल्याण के लिए बाहर के वातावरण में चारों दिशाओं में जाऐं इसलिए चर्च में क्रॉस की योजना है। इस तरह से पूर्वकाल में प्रत्येक धर्म के धर्मप्रवर्तकों ने जगत कल्याण की योजना अनेक शतकों पहले ही कर रखी है और वह किसी के बिना जाने कार्यान्वित हो रही थी।

आज धर्मस्थानों द्वारा वातावरण के शुद्धिकरण का कार्य नहीं हो रहा है, ऐसा क्यों? यहाँ गोवा में ही देखिए अनेक मंदिर है और वहाँ के उपाध्याय दिन के चौबीसों घंटे व्यस्त है। ऐसा लगता है कि वे देवता के लिए कितने अभिषेक करते है परन्तु क्या उनका एक भी अभिषेक देवता के प्रित्यर्थ होता है? नहीं। मतलब दिनभर में या संपूर्ण साल में भी मंदिरों में देवता के प्रित्यर्थ एक भी अभिषेक नहीं हो रहा है। फिर अभिषेक किसलिए होते है? किसी लड़की की शादी नहीं हो रही थी वह हो गई इसलिए अभिषेक होता है। किसी का लड़का इम्तिहान में फेल हो रहा था, वह पास हो गया इसलिए अभिषेक होता है। मतलब लोगों को कर्मपरत्वे दुख होते है उन **कर्मों के क्षालनार्थ आज मंदिरों में अभिषेक किए जाते है इसलिए आज देवालयों में देवत्व नहीं रहा है।** आज देवालयों में 99% विधि लोगों के कर्मक्षालनार्थ किए जाते है और इसलिए मंदिरों द्वारा वातावरण के शुद्धिकरण का कार्य नहीं हो रहा है।

प्रत्येक व्यक्ति ने कर्मपरत्वे जन्म लिया है। उस कर्म का क्षालन करने का माध्यम वह व्यक्ति खुद होता है परन्तु आज ऐसी परिस्थिति है कि अगर मुँह में पेढ़ा रख दिया तो वह पेढ़ा अंदर धकेलने का कार्य भी दूसरों से करवाते हैं। **आज कौन-से देवालय में देवता के प्रित्यर्थ अभिषेक या अन्य कोई विधि किया जाता है?** कहीं भी नहीं। इसलिए देवी-देवताओं के हितसंबंध से मुक्त करने के लिए मैंने आपको कारणदीक्षा देकर प्रार्थना दी है, क्या वह गलत है?

।। कारण दीक्षा के संदर्भ की प्रार्थना।।

मैं, श्री सद्गुरुचरणों में ऐसी प्रार्थना करता हूँ कि मुझे प्राप्त हुआ जीवन साधक-सिद्ध-साध्य आदि अवस्थाओं तक जाए। मेरे प्राप्त जन्म में मेरे जो कर्म ऋणानुबंध मुझे साधक-सिद्ध-साध्य ये अवस्थाऐं प्राप्त होने में अनेक जन्मों तक रूकावटे निर्माण करते है ऐसे उन ऋणानुबंधों की परंपरा आपने कृपावंत होकर मुझे क्रमशः उपासना दीक्षा, नामस्मरण दीक्षा, अनुग्रह दीक्षा, गुरुदीक्षा और कारणदीक्षा आदि का लाभ कराके विमोचित की है। इसलिए आज मैं अपने जीवन में सुलभता से आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक इन अवस्थाओं का लाभ प्राप्त कर सका हूँ। इसके आगे मेरे जीवन में कृपाशीर्वाद की निरंतर अवस्था यानी 'निरंजन अवस्था' का अनुभव मुझे मेरे इसी जन्म में अपनी काया, वाचा, मन से हो ऐसी प्रार्थना मैं आपके चरणों में कर रहा हूँ।

देवालयों में हो रहे अभिषेकों के बारे में मैंने आपको जो बताया है उसका प्रत्यक्ष अनुभव अगर आपको लेना है तो आप गोवा के कामाक्षी मंदिर में जाकर देखिए। वहाँ हो रहा प्रत्येक विधि क्या कामाक्षी देवी के लिए हो रहा है? नहीं और इसलिए देवी पर मलीनता आती है। आप पूछते हैं कि देवता पर मलीनता कैसे आती है? इसका जवाब इस प्रकार है – आपके घर में आईना है। उस आईने में आप अपना मुख हररोज देखते रहते है। आईना आपको नहीं देखता। आपने हररोज केवल इतना करने से भी उस आईने पर मलीनता आती है और आपको वह आईना

पोछना पड़ता है। इसी तरह **मंदिरों में हो रहे विधि देवता के प्रित्यर्थ ना होने के कारण देवता पर मलीनता आती है। देवी-देवता मलीन नहीं होते परन्तु उन विधियों के कारण उनमें देवत्व कम हो जाता है।**

प्राचीन काल में मंदिरों में मानवीय जीवन के उद्धार के लिए 'देव' इस माध्यम का लाभ सत्कार्यार्थ और सत्कारणार्थ होता था। आज इन मंदिरों में मंदिर के अधिकारी व्यक्ति तथा पूजा करने वाले पंडित आपके **कर्मबंधनों के विमोचनार्थ विधि करते है।** मंदिर में एकादष्णी, अभिषेक, अन्न संतर्पण तथा ब्राह्मण-सुवासिनी भोजन हो रहे है। ऐसे इन औपचारों से **पुण्य कर्म** कैसे होगा? **पुण्य कर्म निष्काम, निस्वार्थ होना आवश्यक होता है और ऐसे धर्मकृत्य मंदिरों में आज नहीं हो रहे हैं।** आपके घराने के आराध्य देवी-देवता, आपके कुलदेवी-कुलदेवता इनकी आप इस विचार से सेवा कीजिए कि वे आपके देवी-देवता है। देवता ने मुझे फलाने कर्मबंधन से तथा दुख से मुक्त किया है या करेंगे इस विचार से अगर आप लघुरूद्र या महारूद्र जैसे विधि कर रहे है तो वह पाप है। अगर आप देवी-देवताओं का आदर नहीं कर सकते तो अज्ञान से उनका अनादर मत कीजिए।

आपने खुद ने ही अपने कर्मों से अपनी मुक्तता करनी है। आज आपका कर्म आप पर अनेक प्रकारों से आघात करता है, ऐसा क्यों? इसके पहले आपको बताया है कि **आपके रज और तम गुणों की वृद्धि होने के कारण आपमें 'बल' नहीं है।** आप केवल काया, वाचा, मन का बलहीन, निर्जीव पुतला है इसीलिए आपका कर्म आप पर आघात करता है और ऐसे समय खुद का रक्षण करने के लिए आपके पास **'तारक'** के तौर पर कुछ भी नहीं है। मंदिर का शिखर केवल यहाँ पर मंदिर है यह दूर से दिखाई देने के लिए बाकी रहा है।

पिछले 40 सालों से मैं इस गुरुमार्ग में हूँ। आज तक मैंने आपको कोई भी घटना अतिशयोक्ति पूर्ण नहीं बताई है। इस गुरुमार्ग में मुझे जो अनुभव आए है जो प्रचिति हुई है वह मैंने आपको केवल 12 आने ही बताई है परन्तु आप वह औरों को सवा रुपया करके बताते है। मेरा प्राप्त जन्म इस गुरुमार्ग में व्यतीत हुआ है। इसकी मुझे जो अनुभूति हुई है वह मैं आपको 75% ही बताता हूँ। आप इस अनुभूति का आरंभ, अंत इसके बारे में कुछ भी नहीं जानते और वह अनुभूति आप औरों को सवा रुपया बताते हैं। अगर गुरु के पास 12 आना ही अनुभूति है तो शिष्य के पास सवा रुपया अनुभूति कहाँ से आएगी? उदाहरण के तौर पर देखिए, शिष्य लोग कहते है, ''रात को बाबा ने आकर मुझे बीड़ी दी।'' अरे भाई, देना है तो बाबा संजीवनी देंगे, बीड़ी क्यों देंगे? वह तो देने के बाद खत्म हो जाती है। जिस चीज का नाश होता है ऐसी चीज भगवान देते ही नहीं हैं।

अभी मुलाकात होकर 24 घंटे भी नहीं हुए और कुछ भक्तों ने मुझे पूछा, ''**ॐकार साधना की यह फलानी अनुभूति हमें कब होगी?**'' इस संबंध में मैं आपको एक बात बताता हूँ। 30 साल पहले इस गुरुमार्ग की प्रारंभिक अवस्था में मुझे जो अवस्था प्राप्त हुई थी उस अवस्था में मैं 28 दिन था। मेरे छोटे भाई और मेरी पत्नी ने वह अवस्था देखी है। मुझे क्या हुआ है यह शास्त्र उन्हें मालूम नहीं था। 28 दिनों तक मैं हाड-मांस का लोथड़ा ऐसी अवस्था में था। **मेरे मुँह से**

हरे और लाल रंग की लार की धाराऐं बह रही थी। उस अवस्था में मैं 28 दिनों तक था और उसका बोध मुझे आज यानी उस अवस्था के 30 साल बाद सुबह भोर के समय 3 बजे हुआ है। उस समय जब वह अवस्था हुई थी तब मैंने सोचा कि ठीक है, यह अवस्था क्या होती है इसका अनुभव ईश्वर ने मुझे दिया है परन्तु उस समय मैंने तुरंत ईश्वर से नहीं पूछा कि यह क्या है? उस अवस्था के बारे में मुझे आज भोर के 3 बजे जवाब मिला। मतलब **जिस अवस्था का प्रत्यक्ष अनुभव मुझे हुआ था उसका श्री गुरु से उचित जवाब प्राप्त होने में 30 साल लगे** और आप? आपको कल मैंने ॐकार साधना की संथा सीखाई और आज आप तुरंत पूछते है कि हमें इस साधना का अनुभव कब होगा? आपने यह सवाल पूछा है इसलिए मुझे गुस्सा नहीं आया है लेकिन मेरे बच्चों, जरा सबुरी रखो।

उस समय मेरी वह अवस्था क्या थी? यह विषय बहुत गहन है। उसका प्रात्यक्षिक अगले सेमीनार में दिखाना पड़ेगा। मैंने इसके बारे में सामान्य तौर पर आपको बताया था कि **जब 5वीं अवस्था में ॐकार साधना होती है तब नीचे के सारे स्थान क्रमशः ऊपर ब्रह्मरंध्र की ओर ढकेले जाते है। आखिर में अन्नमय कोष ब्रह्मरंध्र में आता है और ब्रह्मरंध्र कमल जैसे विकसित होकर उसमें से अमृत का स्त्राव होने लगता है। ऐसे समय पर योगी को अन्न और पानी की जरूरत महसूस नहीं होती,** अमृत की केवल एक ही बूँद योगी को अन्न करके 1 साल के लिए पर्याप्त होती है। यह किताबों में वर्णन की हुई अवस्था नहीं है। मैंने प्रत्यक्ष 28 दिनों तक इस अवस्था का अनुभव किया है। उन दिनों में मेरा अन्न और पानी से कुछ भी संबंध नहीं था फिर भी **मेरी मृत्यु नहीं हुई, मैं अधिक तेजःपुंज हुआ।** ब्रह्मस्थान की विकसित होने की क्रिया समाप्त हुई यानी **इस पंचभौतिक देह की धारणा पूर्णतः ईश्वरमय करके यानी विकसित करके ब्रह्मस्थान का वह फूल फिर से बंद हो जाता है और तब संपूर्ण त्रिभुवन पर आपकी हुकूमत स्थापित होती है।**

'अमृत' का स्वाद कैसा होता है? हम ईश्वर से कहते है कि आपका नाम अमृत से भी मीठा, मधुर है लेकिन **अमृत प्रत्यक्ष में अत्यंत कड़वा होता है।** समुद्रमंथन के बाद जब देवता वहाँ से अमृत का कलश लेकर जा रहे थे तब अमृत की केवल एक ही बूँद नीम के पेड़ पर गिरी और नीम के पत्ते कड़वे हुए। मतलब अमृत मधुर नहीं कड़वा होता है यह उसकी साक्ष है। ऐसा वह रस मेरे मुँह से पतीले भर-भर के बह रहा था और उसमें सप्तरंग थे। यह बात मेरी पत्नी और मेरे छोटे भाई से पूछिए। वे सारे उस समय बहुत डर गए थे क्योंकि वह अवस्था क्या है? यह वे समझ नहीं पा रहे थे। **आज मैं 'गुरु' करके आपको उस अवस्था के बारे में बता सकता हूँ और आपको उस अवस्था तक लेकर जा सकता हूँ। उस समय मेरे लिए 'गुरु' यह माध्यम नहीं था।** उस समय मेरे लिए केवल मैं ही था! उस समय मेरी जो अवस्था हुई थी उसका जवाब मुझे कब मिला? तो 30 साल बाद आज भोर के 3 बजे! मतलब **'ॐकार साधना' की साधनसीमा क्या है यह आप सोचिए।** मुझे उस अवस्था से बाहर आने के लिए 28 दिन लगे और उसका जवाब मिलने में 30 साल लगे तो आपको ॐकार साधना का अनुभव आने में कितने दिन लगेंगे?

शेष अंक आगे.....

सेवक,

।। शुभं भवतु ।।